E- ISSN No: 2395-0269

International Journal of Applied and Universal Research
Volume 2, Issue 2, April 2015 Available online at: www.ijaur.com

HISTORICAL BACKGROUND OF LIBERALIZATION – IN INDIA AND ABROD

Dr. Pallavi Mishra
Department of Commerce,
शास0महाविद्यालय नईगढ़ी

शोध सारांश :– आर्थिक उदारीकरण विकासशील अर्थव्यवस्था का विकास मंत्र बन गया है। यह विकासशील देशो की आर्थिक सामाजिक समस्याओं से मुक्ति का अमोद्य अस्त्र माना जाने लगा है। यह दिनो दिन विकसित होती हुई नई अंन्तर्राष्टीय आर्थिक व्यवस्था का आधार है यह छोटे नये तथा राजनैतिक दासता से मुक्त हुए देशो के लिए घोर गरीबी, रोजगार हीनता, निम्न उत्पादकता तथा औद्योगिक पिछड़े पन से छुटकारा पाने का आर्थिक उपकरण है। यह आर्थिक मामलो में मानवीय स्वतंत्रता एवं भागीदारी का स्वरूप है। यह अर्थव्यवस्था को गतिशील ऊर्जा प्रदान करने की कमिया है जिससे देश तेजी से समृद्धि के सिखर की ओर बढ़ सकता हैं। यह समृद्धि और विकासशील देशो के बीच आर्थिक विकास के विनिमय की उदार व्यवस्था है। आर्थिक उदारीकरण आर्थिक विकास के अपार अवसरो की कुंजी है। यह राष्ट्र को गंभीर संकेतो से उबारने मुद्रास्फीति दबाबो से मुक्त करने तथा देश में ढ़ॉचागत सुधार करने की नीति है। यह आर्थिक स्थिरीकरण (economic stabilization) के साथ–साथ सामाजिक न्याय में भी वृद्धि करने का उपाय है। भारत सरकार के आर्थिक सुधारो के एक दस्तावेज के अनुसार, ''आर्थिक उदारीकरण का मूलभूत उद्देश्य भारत के लोगो के जीवन की गुणवत्ता में तेजी से सुधार लाना है''।

प्रस्तावना :– आर्थिक उदारीकरण आज प्रत्येक देश की राष्ट्रीय आर्थिक नीति का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया है। यह सम्पूर्ण विश्व में चल रहे नये आर्थिक सुधारो के दौर का विशेष कारण है। यह एक राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के समष्टि प्रबंधना की विवेकपूर्ण विधि है। विकास के प्रारम्भिक काल में अनेक देशो के आर्थिक क्रिया–कलापो में सरकारी हस्तक्षेप की सीमा में वृद्धि होती रही फलतः एक ऐसी व्यवस्था का जन्म हुआ, जिसमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं खुली प्रतियोगिता के स्थान पर सरकार के नियंन्त्रण एवं विनिमय में वृद्धि होती गयी। किन्तु इस प्रकार की नियन्त्रित अर्थव्यवस्था में कालान्तर में अनेक विसंगतियां उत्पन्न हो गयी। नियन्त्रण, पावंदियों, नियमो तथा राजकीय हस्तक्षेप के इस बढ़ते हुए कठोर शिकंजे से अर्थव्यवस्था लोचहीन होती चली गयी, जो विकास के मार्ग में साधक सिद्ध होने के बजाय बाधक सिद्ध हुई। इस नियंन्त्रणकारी एवं हस्तक्षेप की नीति के फलस्वरूप ही आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया प्रारंम्भ हुई, जो आज सम्पूर्ण विश्व के आर्थिक विकास का मंगलसूत्र बन चुकी है। आर्थिक उदारीकरण आर्थिक सुधार का एक कार्यक्रम है जिसके अंन्तर्गत राष्ट्र की आर्थिक, औद्योगिक, वित्तीय एवं मौद्रिक नीतियों में परिवर्तन करके कठोर जटिल एवं असंगति विनियमों, वैधानिक नियंन्त्रणो एवं प्रशासकीय प्रक्रियाओं को उदार एवं विकास की आवश्यकतो के अनुरूप बनाया जाता है। ताकि देश की अर्थव्यवस्था को उचित गति (velolity) तथा राष्ट्रेत्तर (transnational) दिशा प्रदान की जा सकती है। इस अवधारणा को निम्न चित्र द्वारा समझा जा सकता है।

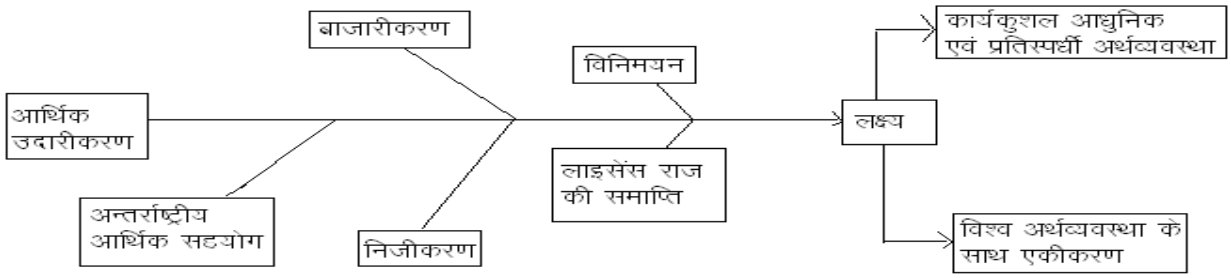

E- ISSN No: 2395-0269

International Journal of Applied and Universal Research
Volume 2, Issue II, April 2015 Available online at: www.ijaur.com

आर्थिक उदारीकरण

आर्थिक उदारीकरण का मुख्य ध्येय विकास की गति को तेज करना है। इसके द्वारा अर्थव्यवस्था को कुशल आधुनिक एवं प्रतिस्पर्धा योग्य बनाया जाता है। भारत में आर्थिक उदारीकरण की भूमिका सातवीं पंचबर्षीय योजना के प्रारंम्भ में ही बन चुकी थी। उस समय प्रधानमंत्री राजीव गॉधी ने आर्थिक उदारीकरण के तीन–सूत्रीय दर्शन का प्रतिपादन किया था यें तीन उद्देश्य है–

- **उत्पादकता में वृद्धि**
- **आधुनिक तकनीकी ज्ञान का प्रयोग**
- **उत्पादन क्षमता का पूर्ण विदोहन।**

तत्कालीन वित्त मंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह के अनुसार आर्थिक उदारीकरण का मुख्य उद्देश्य अर्थव्यवस्था को विकासोन्मुख बनाना है।

नेहरू विकास मॉडलः– भारत में आर्थिक उदारीकरण के युग से पूर्व आर्थिक विकास का नेहरू–महलानबीस मॉडल अपनाया गया था जो की सफल नही हो सका। इस मॉडल के कारण न तो देश में समाजवाद विकसित हुआ न ही पूँजीवाद पनपा। इस मॉडल को योजनाकाल के प्रारंम्भ में ही प्रयुक्त किया गया था। इसमें निर्यात प्रोत्साहन के स्थान पर 'आयात प्रतिस्थापन' को औद्योगिक का केन्द्र बिन्दु बनाया गया। इस मॉडल को क्रियान्वित करके पिछले दशको में देश में पूँजीगत उद्योगो व आधार भूत ढॉचे विद्युत संचार परिवहन आदि का विकास किया गया लेकिन कालान्तर में यह मॉडल विकास को गति नही दे सका। धीरे–धीरे भारतीय अर्थव्यवस्था नियंन्त्रण के जाल – जंजाल में फॅसती चली गयी। फलस्वरूप एक तरफ सार्वजनिक उपक्रमों की लाभप्रदता व कार्यकुशलता का स्तर गिरता चला गया और दूसरी तरफ अनेक प्रतिबंन्धो व वैधानिक नियंन्त्रण के कारण निजी उद्यम अपनी क्षमता के अनुसार विकास नही कर सके। इस मॉडल के कारण देश में आर्थिक एवं क्षेत्रीय विषमताये बढी तथा बेरोजगारी में वृद्धि हुई।

देश में बढते हुए प्रशासकीय नियंन्त्रणो, औपचारिकताओं अनुमोदन व अनुमतियो के जाल के फलस्वरूप निजी उद्यमियो के जाल के फलस्वरूप निजी उद्यमियों की कार्यकुशलता एवं उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव पडा। समाज में शोषण बढा। सरकारी नियंन्त्रणो से बाजार की शक्तियाँ और भी बर्बर बन गयी। भारत में नियंन्त्रण चार वर्गो की भूख मिटा रहा था इससे राजनीतिज्ञो की समाजवाद की भूख, सत्ताधारी दल की चंन्दे की, नौकरशाहो की सत्ता व अधिकारो की तथा भ्रष्ट व्यापारियों व उद्योगपतियो की कर चोरी व काले धन की भूख शांन्त होने में सहायता मिली। धीरे – धीरे देश में काले धन की उत्पत्ति में तेजी आई तथा आर्थिक घोटालो, वित्तीय गड़बड़ियों तथा प्रशासनिक भ्रष्टाचार में वृद्धि होने लगी। दूसरी तरफ नियंन्त्रण से स्थापित उद्योगपतियों को लाभ होने लगा इन बड़े उद्योगपतियों को नयें–नयें उद्यमियो से प्रतिस्पर्धा का खतरा भी नही था। वे शोध एवं विकास पर ध्यान नही दे रहे थे। उनकी उत्पादन टेक्नालॉजी भी पुरानी ही थी। इन सब घटको का दुष्प्रभाव धीरे–धीरे भारतीय अर्थव्यवस्था पर पडने लगा। इस समय देश आर्थिक संकट में फस गया था। 1991 में विदेशी विनिमय कोष घटकर मात्र एक अरब डॉलर रह गया था। जो केवल दो सप्ताह के आयातों के लिए ही पर्याप्त था भारत की साख विदेशों में इतनी घट गई थी कि इसे विनियोग के लिए उपयुक्त देश न माना जाकर सट्टे की श्रेणी वाला देश माना जाने लगा था। इस पृष्ठभूमि में यह आवश्यक हो गया था कि आर्थिक गतिविधियों में सरकारी नियंन्त्रण कम कियें जायें तथा निजी उद्योगो को न्यूनतम हस्तक्षेप के साथ कार्य करने दिया जायें।

उदारीकरण की अर्थव्यवस्था :– यद्यपि भारत में आर्थिक उदारीकरण की शुरूआत सत्तर के दशक के मध्य सें ही हो गयी थीं, लेकिन अधिक व्यापक एवं व्यवस्थित रूप से आर्थिक उदारीकरण की नीति को जुलाई 1991 से अपनाया गया। इस समय संम्पूर्ण विश्व मे भी आर्थिक उदारीकरण की हवा चल रही थी। 1985 मे श्री राजीव गॉधी के प्रधानमंत्री बनने के बाद सरकार की आर्थिक नीति में उदार प्रवृत्तियों की रूपरेखा खीची जाने लगी थी। राजीव गॉधी ने साफ शब्दो मे कहा था– ''सार्वजनिक क्षेत्र को ऐसे कार्यो में लगाना चाहेगें जो निजी क्षेत्र द्वारा नही किए जा सकते, परन्तु हम निजी क्षेत्र के लिए बहुत से द्वार खोल देगे ताकि वह अपना विस्तार कर सके और अर्थव्यवस्था अधिक स्वतंत्र रूप से विकसित हो सके। निजी क्षेत्र को अधिक विस्तृत क्षेत्र उपलब्ध कराने के लिए बहुत से नीति सम्बन्धी परिवर्तन किये गये। ये परिवर्तन औद्योगिक लाइसेन्स नीति, निर्यात–आयात नीति राजकोषीय नीति आदि में किये गये। प्रशासनिक नियमनों को सरल बनाया गया। निजी क्षेत्र को अप्रतिबंन्धित विकास की छूट दी गयी। बहुराष्ट्रीय निगमों के लिए बहुत से अवसर खोले गये। नयी आर्थिक नीति ने नियंन्त्रणो तथा लाइसेन्स राज को तोड़ने पर ध्यान केन्द्रित किया ताकि लाइसेन्स प्राप्त करने में अनावश्यक अड़चने दूर की जा सकें।

यद्यपि आर्थिक सुधार कार्यक्रम राजीव गॉधी के शासन काल में चालू कर दिया गया था। किन्तु इसके इच्छित परिणाम उस समय प्राप्त नहीं किये जा सके। 21 जून 1991 को सत्ता सम्भालने के पश्चात पी0वी0 नरसिंहराव की सरकार द्वारा तेजी से आर्थिक उदारीकरण नीति को लागू किया गया। ब्याज–दर को बढ़ाकर मौद्रिक नीति को मजबूत बनाया गया। रूपये की विनिमय दर 22 प्रतिशत अवमूल्यन किया गया और व्यापार प्रणाली में भारी सरलीकरण और उदारीकरण की घोषणा की गई। अपने केन्द्रीय बजट के माध्यम से सरकार ने उदारीकरण के

E- ISSN No: 2395-0269
International Journal of Applied and Universal Research
Volume 2, Issue II, April 2015 Available online at: www.ijaur.com

दृष्टिकोण के प्रति अपनी बचनवद्धता को दोहराया। उदारीकरण नीति के तहत देश की औद्योगिक नीति 24 जुलाई 1991 को संशोधित की गई तथा उसमें अनेक उदारवादी तत्व शामिल किये गये। उदारवादी दृष्टिकोण वाले आर्थिक सुधारों से देश में विदेशी मुद्रा कोष में आशातीत वृद्धि हुई हैं और 1991 में उपस्थित विदेशी मुद्रा के संकट को दूर करने में सफलता मिली है।

आज किसी भी देश की अर्थव्यवस्था अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रभावो एवं वातावरण से अछूता नही रह सकती विश्व में आर्थिक उदारीकरण की हवा ने अनेको देशों को प्रभावित किया। रूस व चीन जैसे साम्यवादी देशो ने भी उदारीकरण का मार्ग अपनाया। चीन में इस नीति को 1978 सें लागू किया गया जिसके फलस्वरूप पिछले 16 बर्षो (1978–1993) में इसकी बार्षिक विकास दर 9 प्रतिशत रही, जबकि 1953 से 1978 तक के 26 बर्षो में यह मात्र 61 प्रतिशत रही थी। लेटिन अमेरिका में ब्राजील व मैक्सिको ने तथा 4 एशियन टाइगर्स – हॉगकॉग, दक्षिणकोरिया सिंगापुर व तैवान ने भी आर्थिक उदारीकरण को अपनाया है। इसके अतिरिक्त इन्डोनेशिया, मलेरिया थाईलैण्ड, श्रीलंका, पाकिस्तान ने भी आर्थिक उदारीकरण की नीति को लागू किया है।

यद्यपि देश ने राजनीतिक स्वतंत्रता 1947 में प्राप्त कर ली थी किन्तु इसकी आर्थिक आजादी सरकारी नियंन्त्रणो, जटिल प्रशासनिक कार्य पद्धतियों अफसरशाही के नियमो तथा उद्योग व व्यवसाय पर लगी बेशुमार पाबंन्दियों में कैद हो गई। व्यावसायिक क्रियाओ पर प्रतिबंन्धो का शिकंजा निरन्तर कसता चला गया, जब तक कि आठवे दशक के मध्य में भारतीय अर्थव्यवस्था चरमरा न गई। इसके बाद औद्योगिक विकास पर लगे नियंन्त्रणो को एक–एक करके कम करने का क्रम शुरू हुआ। उदारीकरण के प्रयासो से औद्योगिक विकास की गति सहसा तेज हुई तथा अर्थव्यवस्था व पूँजी बाजार समृद्धि की ओर बढने लगे आर्थिक उदारीकरण के प्रयास 1985 से ही सघन हो गए थे। जो आज तक जारी है वस्तुतः उदारीकरण की विभिन्न प्रवृत्तियो व प्रयासो को निम्न दो भागो मे बॉट कर अध्ययन किया जा सकता है।

1) 1985 से 1990 तक की अवधि में उदारीकरण
2) 1991 से वर्तमान तक उदारीकरण के प्रयास

भारत में आर्थिक उदारीकरण को आत्मसात किए 23 बर्ष (1991–2014) पूर्ण हो चुके हैं। उदारीकरण का द्वितीय दौर अभी जारी हैं। उदारीकरण के प्रारंभिक वर्षो में रूपये का अवमूल्यन, औद्योगिक नीति में व्यापक परिवर्तन, नवीन एक्जिम पॉलिसी, इस्पात विनियन्त्रण, रूपये की चालू खाते पर परिवर्तनीयता अप्रवासी भारतीयो को भारी छूट, विदेशी निवेश को वढ़ावा, फेरा के स्थान पर फेमा, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (foreign direct investment- FDI) को आकर्षित करने के प्रयास आदि अर्थ सम्बद्ध परिवर्तनो को प्राथमिकता दी गई किन्तु दुर्भाग्यवश देश में राजनैतिक अस्थिरता और विरोधाभास के कारण आर्थिक उदारीकरण के प्रति सकारात्मक सोच का ज्यादा विस्तार नही हो सका। फिर भी नवीन केन्द्र सरकार उदारीकरण पर आधारित नीतियों व कार्यक्रमो को सफल बनाने व जन सहयोग प्राप्त करने हेतु हर सम्भव प्रयास कर रही है इन्ही प्रयासों में अप्रैल 2000 से 714 वस्तुओं और अप्रैल 2001 से शेष 715 वस्तुओं (कुल 1429) पर से मात्रात्मक प्रतिबंन्ध हटाए गए। मात्रात्मक प्रतिबंन्धो की समाप्ति के कारण भारत में कृषि एवं लघु क्षेत्र के लिए अनेक चुनौतियॉ उत्पन्न हो गई है। सार्वजनिक उपक्रमों में विनिवेश के लक्ष्य भी पूरे नही हो पा रहे है। 1999–2000 में 100 अरब रूपए की तुलना में 26 अरब रूपए और 2004–2005 में 4000 अरब रूपए के लक्ष्य के मुकाबले 40 अरब रूपए ही प्राप्त हुए।

निष्कर्ष :–

निर्विवाद रूप से उदारीकरण भारतीय अर्थव्यवस्था में एक क्रान्तिकारी एवं साहसिक कदम है। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय उद्यमों को प्रशासनिक जकड़न कठोर सरकारी प्रतिबंन्धो तथा असंगत वैधानिक नियंन्त्रणो से मुक्त करके उनकी कार्यप्रणाली में लोच कार्यकुशलता एवं विकास क्षमता पैदा करता था। उदारीकरण के फलस्वरूप ही औद्योगिक एवं व्यावसायिक उपक्रम लालफीताशाही, भ्रष्टाचार, इन्सपेक्टर राज अनावश्यक औपचारिकताओ, विघ्नकारी पाबंन्दियों एवं अवरोधक नियमों से छुटकारा पा सके। उदार आर्थिक नीति से देश में उत्पादन एवं विनियोग का वातावरण बना है। उदारीकरण से देश में विदेशी पूँजी के आगमन, नई प्रौद्योगिकी एवं तकनीक के विकाश, उपभोक्ता वस्तुओं के वाहुल्य, निर्यात रोजगार व आय में वृद्धि की आशाएँ की जा रही हैं। स्वदेशी उद्योग धन्धे अपनी भावी समृद्धि को लेकर आशान्वित हैं। यह माना जा रहा है कि उदारीकरण सामाजिक असमानता को दरकिनार करके उद्योग और वाणिज्य के दरवाजे हर उस क्षमतावान व्यक्ति के लिए खोलता है जिसमें अवसरों को भुनाने की क्षमता हो। इस नीति ने राजकीय, एकाधिकार को तोड़ा है उदारीकरण की दस्तक बड़े उद्योगो से लेकर लघु उद्योगो तक की जा सकती हैं। यह गाँवों और खेत खलिहानों तक भी अपनी आवाज पहुँचाता है। उदारीकरण ग्रामीण और कुटीर उद्योग तक को आधुनिकता के ढॉचे में ढ़ालकर उन्हे विश्व बाजार देने की क्षमता रखता है। ऐसा चीन में हुआ है जहॉ की गुडियां अर्न्तराष्ट्रीय बाजार में छाई हुई है। यह रोजगार में वृद्धि भी कर सकता है और देशी कलात्मकता के नये आयात भी दे सकता है। एक ओर जहॉ इसके माध्यम से अभिजात्य वर्ग की उपभोक्ता वस्तुओं में विस्तार होता है। वही निचले वर्ग की श्रमशीलता में भी वृद्धि हो सकती है और उसकी आर्थिक शक्ति भी बढ़ सकती है।

सुझाव :– भारत की आर्थिक उदारीकरण की नीति देश को विश्व के आर्थिक औद्योगिक मानचित्र पर एक ऊँचा

स्थान दिला पायेगी, यह निर्विवाद सत्य है, किन्तु हमें इसमें निहित चुनौतियों का सामना करना होगा और उत्पन्न समस्याओ को निरन्तर हल करने का मार्ग खोजना होगा। उदारीकरण की भावी दिशा निर्धारित करते समय निम्नलिखित बातो पर विचार करके चलना चाहिए।

- आर्थिक आत्मनिर्भरता पर बल
- भारतीय जरूरतो की अनुगामी
- राजनीतिक सम्प्रभुता की सुरक्षा
- जन–जन को लाभ
- आन्तरिक उदारीकरण
- कृषि के लिए आर्थिक नीति बनाना
- चुनौतीपूर्ण कार्यक्रम
- उदारीकरण की मूल भावना का स्वीकृति
- लोकहित से जोड़ना
- स्वदेशी उद्यमियों पर ध्यान
- विदेशी निवेश का क्षेत्र निश्चित होना
- राजनीतिक स्थिरता
- सामाजिक पक्ष पर अधिक बल
- आर्थिक नीतियों का भारतीयकरण

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1 गौरव घोष, अर्पिता घोष : सी पी टी
2 डॉ0 बी0सी0 सिन्हा : भारतीय आर्थिक नीति
3 जी0एस0 सुधा : व्यवसायिक पर्यावरण
4 मनु प्रकाश श्रीवास्तव : UGC NET
5 डॉ0 ओ0पी0 शर्मा, डॉ0 के0के0 शर्मा : UGC NET
6 डॉ0 एस0सी0 जैन : अर्न्तराष्ट्रीय विपणन
7 प्रो0 एस0आर0 ठाकुर : व्यवसायिक अध्ययन
8 डॉ0 अनुपम गोयल : व्यवसायिक अध्ययन
9 डॉ0 बी0सी0 सिन्हा : व्यवसायिक पर्यावरण
10 डॉ0 रामरतन शर्मा : भारतीय अर्थशास्त्र
11 जी0 उपाध्याय, आर0एल0 शर्मा : व्यवसायिक अर्थशास्त्र
12 डॉ0 बी0सी0 सिन्हा : आर्थिक विकास
13 नवीन शोध संसार